नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित 2005 ई.

पत्रांक.....

दिनांक : 29.07.2022

प्रकाशनार्थ

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के अंतर्गत महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों के क्रम में वाणिज्य संकाय द्वारा 29 जुलाई, 2022 को 'अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस' पर 'बाघों का संरक्षण' विषय पर कार्यक्रम के रूप में संकाय में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में प्रतिभागी छात्रों ने बाघों के संरक्षण से प्राप्त होने वाले आर्थिक, पारिस्थिकी एवं राष्ट्रीय महत्त्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। गोष्ठी में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रीति चौरसिया बी.कॉम. भाग–तीन ने कहा कि रूस के सेंट पीट्सबर्ग में हुए बाघ सम्मेलन में 29 जुलाई 2010 को इसी दिन प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय 'बाघ दिवस' मनाने का निर्णय लिया गया। वैश्विक स्तर पर बाघों के संरक्षण व उनकी प्रायः लुप्त हो रही प्रजाति को बचाने हेतु जागरूकता फैलाना ही 12वां अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस का मुख्य उद्देश्य है। सारिका पटेल एम.कॉम. तृतीय सेमेस्टर ने बताया कि बाघ को भारत का राष्ट्रीय पशु कहा जाता है। बाघ देश की शक्ति, शौर्य, सतर्कता, बुद्धि और धैर्य का प्रतीक है। वैश्विक बाघों की आबादी का 70% हिस्सा भारत में उपस्थित है। भारत में वर्ष 2010 में 1700 बाघ थे, वर्ष 2018 की गणना के अनुसार देश में बाघों की संख्या 2967 हो गई है। भारत के 18 राज्यों में 51 'बाघ अभयारण्य' है, वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड के अनुसार वैश्विक स्तर पर बाघों की संख्या 3900 है। प्रतिभागी ममता मझवार बी.कॉम. भाग–तीन ने पर्यटन उद्योग में बाघों के महत्व को बताते हुए कहा कि गोरखपुर चिड़ियाघर 'शहीद अशफाक उल्ला खाँ प्राणि उद्यान' में बाघ 'अमर' एवं बाघिन 'मैलानी' पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। इसी तरह देश भर में उपस्थित बाघ अभयारण्य एवं प्राणि उद्याान स्थानिक स्तर पर पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देते हुए आर्थिक समृद्धि में योगदान करते हैं। प्रतिभागी पूजा साहनी एम. कॉम. तृतीय सेमेस्टर ने बाघ का पर्यावरणीय महत्व बताते हुए कहा कि बाघ स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य श्रृंखला में उच्च उपभोक्ता होते हुए शाकाहारी जंतुओं एवं वनस्पति के मध्य संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। बाघ संरक्षण हेतु वन क्षेत्र के विस्तार के परिणाम स्वरूप स्वच्छ हवा, पानी, तापमान विनियमन जैसी पारिस्थितिकी संतुलन की प्राप्ति सम्भव हो सकती है।

कार्यक्रम के अन्त में वाणिज्य विभाग प्रभारी श्री नन्दन शर्मा ने आभार ज्ञापन करते हुए बताया कि बाघ संरक्षण पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए अति महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम का संयोजन वाणिज्य विभाग के सहायक आचार्य श्री सिद्धार्थ कुमार शुक्ल ने किया एवं वाणिज्य विभाग के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डॉ. सुधा शुक्ला

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी